प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय पंतनगर, जिला- ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

खरपतवार प्रबंधन के विभिन्न आयामों पर प्रकाश डाला वैज्ञानिकों ने

खरपतवार परियोजना की २५वीं वार्षिक बैठक प्रारम्भ

पंतनगर। ७ जून २०१८। पंतनगर विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के सभागार में आज भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित अखिल भारतीय खरपतवार शोध प्रबंधन परियोजना (एक्रिप) की २५वीं वार्षिक मूल्यांकन बैठक के उद्घाटन सत्र का आयोजन हुआ। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता पंतनगर विश्वविद्यालय के कुलपति, प्रो. ए.के. मिश्रा, ने की। इस अवसर पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के सहायक महानिदेशक, कृषि विज्ञान एग्रोफोरेस्ट्री एवं जलवायु परिवर्तन, डा. एस. भास्कर, विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। खरपवार अनुसंधान निदेशालय, जबलपुर, के निदेशक, डा. पी.के. सिंह; परिषद द्वारा प्रायोजित खरपतवार प्रबंधन पर अखिल भारतीय समन्वित शोध परियोजना की प्रभारी, शोभा सोंधिया; अधिष्ठाता कृषि, डा. जे. कुमार; विभागाध्यक्ष सस्य विज्ञान विभाग, डा. डी.एस. पाण्डे तथा परियोजना के पंतनगर केन्द्र के अध्यक्ष एवं आयोजन-सचिव, डा. वी.पी. सिंह भी इस कार्यक्रम में मंचासीन थे। इस वार्षिक बैठक को खरपतवार निदेशालय, जबलपुर द्वारा प्रायोजित किया जा रहा है।

कार्यक्रम के अध्यक्ष कुलपति, प्रो. ए.के. मिश्रा, ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि एक्रिप द्वारा चलाये गये कार्यक्रम और शोधों का बहुत बड़ा योगदान है। इनके कार्यक्रम में किसान, वैज्ञानिक और कृषि संस्थान के सहयोग से हरित क्रांति का प्रभाव सकारात्मक हुआ है। उन्होंने बताया कि फसलों की किस्मों को अनुवांशिकी रूप से परिवर्तित कर खरपतवार के प्रति अवरोधी बनाया जा सकता है। उन्होंने यह भी बताया कि खरपतवारों पर लगातार रसायनों का प्रयोग करने से उनमें प्रतिरोधिता विकसित होने लगी है। प्रो. मिश्रा ने जलवायु संबंधित शोधों को महत्वपूर्ण बताते हुए शोधकर्ताओं को इस पर ध्यान केन्द्रित करने को कहा। उत्तराखण्ड और देश के अन्य हिस्सों में उन्होंने खरपतवारों का पर्वतीय क्षेत्रों में जानवरों का चारा एवं कम्पोस्टिंग में उपयोग करने का सुझाव दिया।

मुख्य अतिथि डा. एस. भास्कर ने बताया कि खरपतवारों के नियंत्रण से ही उत्पादन दोगुना हो सकता है। इसके लिए चाहिए कि हम समय से खरपतवारों का नियंत्रण करें। साथ ही उन्होंने यह भी बताया कि एकीकृत खरपतवार प्रबंधन द्वारा किसान खरपतवार का आसानी से नियंत्रण कर सकता है और फसल के उत्पादन में वृद्धि कर सकता है। उन्होंने कार्बनिक खेती पर बल देते हुए कहा कि इससे उत्पादन में गुणवत्ता आती है और खरपतवार नियंत्रण भी होता है। साथ ही उन्होंने कहा कि यांत्रिक खरपतवार नियंत्रण करने से मृदा और फसलों की गुणवत्ता बनी रहती है।

अधिष्ठाता डा. जे. कुमार ने कहा कि खरपतवार ऐसे पौधे होते है जो बिना चाहे खेत में फसल के साथ उगते है और इनके प्रबंधन के बिना एक स्थायी और सफल उत्पादन संभव नहीं है। उनके अनुसार खरपतवारों से १०-८० प्रतिशत उपज का नुकसान होता है और अगर समय से उनका नियंत्रण किया जाये तो खाद्य सुरक्षा पूर्ण की जा सकती है। उन्होंने खरपतवार प्रबंधन तकनीकों में गैर-रासायनिक विधियां, यांत्रिक विकास, जीरो टिलेज का प्रयोग, फसल चक्र प्रबंधन एवं धान की सीधी बुवाई में प्रभावी खरपतवार नियंत्रण का उल्लेख किया।

डा. डी.एस. पाण्डे ने देश में संतोषजनक खरपतवार प्रबंधन के लिए सभी खरपतवार वैज्ञानिक और उद्योगपतियां की सराहना की, लेकिन साथ ही उन्होंने धान-गेंहू के फसल चक्र में कई खरपतवारों में प्रतिरोधिता उत्पन्न होने के कारण उन पर रसायनों का प्रयोग अप्रभावी होने की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित किया। डा. पाण्डे ने कहा कि भविष्य में खरपतवार जीनोमिक्स कई सवालों का जबाब हो सकता है। निदेशक भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, डा. पी.के. सिंह, ने अतिथियों व वैज्ञानिकों का स्वागत करते हुए बताया कि खरपतवार की अधिकता मनुष्य, पर्यावरण और जीव-जन्तुओं के लिए भी हानिकारक है।

इस अवसर पर जे.टी. राज्य कृषि विश्वविद्यालय, हैदराबाद के केन्द्र को, बेस्ट सेन्टर अवार्ड दिया गया। इस अवार्ड के अन्तर्गत इस केन्द्र को एक लाख रूपये की राशि भी दी गयी। उद्घाटन सत्र में जबलपुर केन्द्र से दो कोयम्बटूर से एक एवं आनन्द केन्द्र से दो साहित्यों का विमोचन अतिथियों द्वारा किया गया। इस दो-दिवसीय कार्यशाला में भारत के विभिन्न केन्द्रों से लगभग ७० वैज्ञानिक खरपतवार प्रबंधन में इस परियोजना में हुए मुख्य शोध निष्कर्षों को साझा करेंगे तथा भावी रणनीति पर चर्चा करेंगे। इस कार्यशाला में ६ तकनीक सत्र आयोजित होंगे, जिनमें विभिन्न प्रांत के वैज्ञानिक और विशेषज्ञ खरपतवार प्रबंधन के निष्कर्षों पर चर्चा करेंगे। इस कार्यक्रम के तहत ८ जून २०१८ को कृषक, वैज्ञानिक एवं शाकनाशी उत्पादकों के बीच चर्चा कर आने वाले समय हेतु खरपतवार नियंत्रण पर रणनीति तैयार की जायेगी।

खरपतवार शोध परियोजना की बैठक के उद्घाटन सत्र में साहित्य का विमोचन करते कुलपति प्रो. ए.के. मिश्रा (मध्य में) एवं अन्य वैज्ञानिक।